१ ओअंकार (ੴ) सति गुर प्रसादि

जीवन - यात्रा एवं उपदेश श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी

तुल्नातमिक धर्म अध्ययन

>< >< >< >< >< >< >< >< >< >< ><

मूल रूप में

सिक्ख मिशनरी कॉलेज (रजि.)
लुधियाना द्वारा प्रकाशित पुस्तक

क्रांतिकारी जगत् गुरू नानक देव चैरिटेबल ट्रस्ट, चण्डीगढ़

लॉन्च करता : जसबीर सिंघ

Mob. : 099881-60484, 62390-45985

Type Setting : Radheshyam Choudhary

Mob. : 098149- 66882

Download Free

जीवन –यात्रा एवं उपदेश
श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी

श्री गुरू गोबिन्द सिंघ जी का जन्म माता गुजरी की गोद से 22 दिसम्बर सन् 1666 को पटना साहिब में हुआ। इस समय आपके पिता श्री गुरू तेग बहादुर गुरमति प्रचार के लिए ढाका गए हुए थे। सन् 1670 में आसाम से वापिस आकर उन्होंने अपने सपुत्र को प्रथम बार देखा। तब गुरू जी साढ़े तीन वर्ष के हो चुके थे। कुछ समय पटना रहकर गुरू तेग बहादुर जी आनन्दपुर साहिब आ गए।

पटना में बालक गोबिन्द राय जी जब अपने मित्रों के साथ खेलने के लिए निकलते, तब सारे बालक आपको अपना सरदार मानते। तीर कमान चलाना, सेना बनाकर बनावटी युद्ध करना इत्यादि पौरूष भरे खेल खेले जाते। पटना में ही पंडित शिवदत्त आपके चरण कमलों का भँवरा बना। राजा फतेह चन्द मैणी व उसकी पत्नी आप पर बहुत प्रसन्न हुए और आप से उन्होंने पुत्र–सा गहरा प्यार प्राप्त किया। पटना में आपने अन्य कई लीलाएँ कीं। साथी मित्रों में आपने ऐसी वीरता भी दी कि जब भी किसी नवाब की सवारी उधर से गुज़रती तो सारे बालक मिलकर उसको मुंह चिढ़ाते । इस प्रकार सब बालकों के मन से नवाबों का भय समाप्त हो गया।

गुरु तेग बहादुर साहिब ने आनन्दपुर साहिब जाकर परिवार को भी वहीं बुला लिया। आप से बिछुड़ने के वियोग के कारण पटना निवासियों की दशा अति करुणाजनक हो गई। सभी मित्रों–प्रिमियों व श्रद्धालुओं को आपकी प्रेम लीलाओं की याद आने लगी व उनकी आखों से आसूं बह निकले। पांच वर्ष आपने पटना में बिताए थे। आनन्दपुर साहिब आकर आपने फारसी, हिन्दी, संस्कृत, बृज इत्यादि भाषाएं सीखीं। आपको घुड़सवारी व शस्त्र–विद्या सिखाई गई। पिता गुरु तेग बहादुर ने भविष्य में आने वाले संकटों का मुकाबला करने के लिए आपको निपुण बना दिया था।

जब 11 नवम्बर सन् 1675 में पिता गुरू तेग बहादुर दिल्ली में औरंगज़ेब द्वारा शहीद कर दिए गए, तब आप गुरू गद्दी पर बैठे । तब आपकी आयु केवल 9 वर्ष की थी।

गुरु–गद्दी सम्भालते ही आपने सत्संगत में जोश भरना शुरु कर दिया। गुरू तेग बहादुर जी की शहीदी के बाद यह ज़रूरी हो गया था कि फौज तैयार करके मुगल राज्य के साथ टक्कर ली जाए। आपने शस्त्र विद्या को बढ़ावा दिया। 52 कवियों द्वारा वीर रस का साहित्य तैयार किया। सन् 1682 में एक विशाल नगाड़ा तैयार करवाया गया जिसका नाम 'रणजीत नगाड़ा' रखा गया। शस्त्र विद्या के साथ–साथ राग विद्या का भी विशेष प्रबन्ध था। गुरु जी को स्वयं रागों का बहुत शौक था। आप ताऊस बड़ा कमाल का बजाते थे। आनंदपुर साहिब में कई लंगर आरम्भ किए गए। जाति अभिमानियों को इससे गहरी चोट लगी।

सन् 1684 से 1687 तक आप रियासत नाहन में रहे। आपने नाहन में राजा मेदनी प्रकाश तथा श्रीनगर के राजा फतेहशाह की सुलह करवाई। सन् 1685 में यमुना के किनारे 'पाऊंटा साहिब' गुरुद्वारा बनवाया। यहीं पर आपने 'जपु साहिब', 'सवैये' तथा अकाल उस्तति' बाणियों की रचना की। सत्संग में वीर रस भरने के लिए कवि–दरबारों का आयोजन किया जाने लगा। यहां से 15 कोस की दूरी पर गांव 'सढौरा' था। यहां का पीर 'सैय्यद बुद्ध शाह' आप जी का सेवक बना, जिसने 500 पठान गुरू जी को फौज को अर्पित किए।

15 अप्रैल, 1687 को 'भंगाणी का युद्ध' हुआ। 'कहिलूर' के राजा भीमचंद ने पहाड़ी राजाओं को साथ लेकर गुरू जी पर आक्रमण किया। पाऊंटा से 7 मील पूर्व की तरफ यमुना और गिरि नदियों के बीच के स्थान 'भंगाणी' पर युद्ध हुआ। इस युद्ध में गुरू जी की भुआ बीबी वीरो जी के पाँचों पुत्रों तथा मामा कृपाल चंद जी ने भाग लिया। गुरू जी के सिख महन्त कृपाल दास जी उदासी ने भारी लाठी द्वारा 'हयात खाँ' का सिर फोड़ दिया। पहाड़ी राजे हार गए। बीबी वीरो जी के पुत्र संगो शाह और जीतमल शहीद हुए। पीर बुद्ध शाह के दो पुत्र एंव एक भाई शहीद हुआ। पहाड़ी राजा 'हरिचन्द' को मिलाकर तीन पहाड़ी राजे मारे गए। सतिगुरु जी ने अगले दिन ही पीर बुद्ध शाह को एक कटार, एक सुंदर पोशाक व हाथों लिखा एक हुक्मनामा प्रदान किया। पीर बुद्ध शाह ने गुरू जी का कंघा, जिसे आपने अभी प्रयोग किया था और इसमें आपके कुछ केश भी अटके हुए थे, स्वंय मांग कर लिया। भंगाणी के युद्ध के बाद गुरू जी अक्तूबर 1687 में वापिस आनंदपुर आ गए। दिसम्बर 1704 तक यानि 17 वर्ष आप यहीं रहे।

सन् 1688 में नदौण का युद्ध जम्मू के नवाब अल्फ़ खां के साथ हुआ। सन् 1689 में 'हुसैनी युद्ध' हुआ जिसमें पहाड़ी, राजा हुसैन खाँ को चढ़ा कर लाए थे। दोनों युद्धों में गुरू जी की जीत हुई और पहाड़ी राजाओं को मुंह की खानी पड़ी।

सन् 1697 में भाई नन्द लाल जी गुरु गोबिन्द सिंघ जी के सिक्ख बने। सन् 1699 को वैसाखी के दिन गुरू जी के केसगढ़ के स्थान पर पांच प्यारों को अमृत छकाकर 'खालसा' तैयार किया। सन् 1700 से लेकर 1703 तक पहाड़ी राजाओं ने आनंदपुर साहिब में चार लड़ाईयां लड़ीं। गुरू जी की प्रत्येक बार जीत हुई। पहाड़ी राजाओं के कहने पर औरंगज़ेब ने दिल्ली से मुगल फौज भी भेजी, ताकि गुरू जी को पकड़ा जा सके। सन् 1704 के मई महीने में आनंदपुर साहिब की आखिरी लड़ाई लड़ी गई। बहुत समय तक युद्ध होता रहा। सरहिंद का सुबेदार 'वज़ीद खां' भी फौज लेकर पहुंच गया था। मुगल फौज ने 6 महीने आनंदपुर साहिब को घेरे में रखा। किले में भोजन समाप्त हो गया। अंत में (20 – 21 दिसम्बर) की मध्य रात्रि को गुरू जी ने किला छोड़ा।

सिंघ अभी कीरतपुर से गुज़र ही रहे थे कि वैरी दल सिंघों पर टूट पड़ा। सरसा नदी का जल पूरे वेग पर था। सरसा नदी के किनारे भयानक युद्ध हुआ। माता गुजरी जी छोटे साहिबज़ादों समेत गुरू जी से बिछुड़ गए। गुरू जी चमकौर साहिब पहुँचे, जहां 22 दिसम्बर, 1704 को चमकौर का युद्ध हुआ। 40 सिंघों ने लाखों फौज का मुकाबला बड़ी वीरतापूर्वक किया। बड़े साहिबज़ादे बाबा अजीत सिंघ जी तथा बाबा जुझार सिंघ जी दुश्मनों के टुकड़े करते हुए अंततः शहीद हुए। पांच सिंघों के फैसले अनुसार गुरू जी 'माछीवाड़े' के जंगलों में जा पहुंचे। माछीवाड़ा से हेरां तक 'उच्च के वीर' बनकर गए। 27 दिसम्बर सन् 1704 को आपके छोटे साहिबज़ादे दीवारों में खड़े करके शहीद कर दिए गए।

गुरु जी ने गांव दीने में पहुंचकर औरंगज़ेब को फारसी में एक पत्र लिखा जिसको 'ज़फ़रनामा' (विजय – पत्र) कहा जाता है। यह पत्र भाई दया सिंघ जी लेकर गए थे।

8 मई सन् 1705 को 'मुक्तसर' में मुगल फौजों से भीषण युद्ध हुआ। इसमें माई भाग कौर और भाई महां सिंघ जत्थेदार शेष सिंघों सहित बहुत वीरता से लड़े। भाई महा सिंघ जी शहीद हो गए। शहीद सिंघों का जहां संस्कार किया गया वहां गुरुद्वारा शहीदगंज बनाया गया है।

मुक्तसर से गुरू जी तलवंडी साबो पहुँचे। गुरू जी यहां लगभग 1 वर्ष तक रहे। यहां भाई डल्ले की परख की तथा उसे डल्ला सिंघ बनाया। यहीं पर गुरू जी ने भाई मनी सिंघ द्वारा श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी को बीड़ (स्वरूप) तैयार करवाई जिसमें गुरू तेग बहादुर जी की वाणी भी शामिल है।

अक्तूबर 1706 में आप दक्षिण की ओर चल पड़े। 3 मार्च 1707 को औरंगज़ेब मर गया। बहादुरशाह ने राज - सिंहासन पर बैठने के लिए गुरू जी से सहायता मांगी। गुरू जी ने भाई दया सिंघ व भाई धर्म सिंघ की कमान में एक जत्था भेजा। बहादुरशाह की जीत हुई। उसका भाई आजम मारा गया। वह भारत का शासक बना। बहादुरशाह ने बहुत आदर - सत्कार सहित गुरू जी को कीमती भेंट प्रदान की। गुरू जी उस समय आगरा में थे। अगस्त 1707 से सितम्बर 1708 तक आप बहादुरशाह के साथ रहे। सितम्बर 1708 में नंदेड़ पहुंचे। नंदेड़ में वैरागी माधो दास को मिले। उसको अमृत छका कर बंदा सिंघ (बहादुर) बना दिया और पंजाब की तरफ युद्ध करने के लिए भेजा।

18 अगस्त सन् 1708 की वज़ीर खां सूबा सरहिंद के भेजे हुए दो पठानों ने एक रात धोखे से गुरू जी पर छुरे से वार किया। सतगुरु जी ने एक पठान को अपनी तलवार से उसी समय मार दिया। दूसरा पठान सिंघों के पहुंचने पर सिंघों के हाथों मारा गया। एक जर्राह (हकीम) को बुलाया गया। उसने आपका जख़्म साफ़ करके टांके लगाए व मल्हम पट्टी कर दी। घाव भरना आरम्भ हो गया।

सन् 1699 की वैसाखी के दिन गुरू जी ने अमृत छका कर व्यक्ति - गुरु की परम्परा उसी समय समाप्त कर दी थी। फिर 22 - 23 दिसम्बर सन् 1704 की रात चमकौर की गढ़ी में खालसे की वीरता देखकर खालसे को ही गुरुआई सौंप दी थी। व्यक्ति - गुरु की परम्परा समाप्त करने का यह दूसरा कदम था। 7 अक्तूबर 1708 ई: को अपना ज्योति ज्योत समाने का समय निकट जान कर आपने दीवान सजाया। भरे दीवान में आपने हुक्म किया कि आज के बाद खालसे ने अपना गुरू 'गुरु ग्रन्थ साहिब' को मानना है। अन्य कोई व्यक्ति गुरू या देहधारी गुरू नहीं होगा। गुरू ग्रंथ साहिब को माथा टेककर तथा हमारी 'आत्मा ग्रन्थ में तथा शरीर पंथ में', कह कर आप ज्योति - ज्योत समा गए। गुरू ग्रन्थ साहिब अब युगो - युग अटल गुरू है।

आपके ज्योति - ज्योत समाने के बाद बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने पंजाब जाकर ज़ालिमों को सज़ाएं दीं। सरहिंद की ईंट से ईंट बजाई गई व सूबा सरहिंद वज़ीर खां को उसकी काली करतूतों की सज़ा दी गई। सरहिंद से कुछ मील दूर 'चप्पड़ चिड़ी' के स्थान पर हुए युद्ध में उसे कत्ल कर दिया गया।

दशमेश जी की शिक्षा

गुरू गोबिन्द सिंघ जी महाराज प्रथम गुरू नानक देव जी का दसवां रूप ही थे। उन्होंने नये सिद्धांत नहीं बनाए, गुरू नानक जी के विचारों का ही प्रचार किया। यह अलग बात है कि उनकी भाषा की शैली भिन्न थी। आपने अपनी वाणी में प्रभु के स्वरूप व पहचान के बारे लिखा, प्रभु की स्तुति की, पाखण्डों का विरोध करके एक 'अकाल पुरख' की शरण को ही उत्तम बताया। आपने प्रभु को जल - स्थल व प्रत्येक स्थान पर विद्यमान बता कर उस द्वारा संसार को दिये गए बहुमूल्य उपहारों का वर्णन किया है। आपकी वाणी जिज्ञासु का मन प्रभु चरणों में जोड़ देती है। आपकी वाणी के मुख्य उपदेश इस प्रकार है :

1. **प्रभु का स्वरूप :** जैसे गुरू नानक देव जी ने 'जपु जी' के आरम्भ में, मूलमंत्र में प्रभु के गुणों की व्याख्या की है उसी तरह गुरू गोबिन्द सिंघ जी ने 'जापु' के पहले पद में परमात्मा का स्वरूप बताया है। उसका संक्षेप यह है कि प्रभु का कोई खास पहरावा नहीं, उसका कोई एक नाम नहीं है, जो उसकी पूर्णता का ब्यान कर सके। इसलिए ज्ञानी पुरुष उसकी भिन्न - भिन्न लीला देखकर उसको भिन्न - भिन्न नामों से पुकारते हैं।

चक्र चिन्ह अरु बरन, जाति अरु पाति नहिन जिह ।।

रूप रंग अरु रेख, भेख कोऊ कहि न सकति किह ।।

अचल मूरति, अनभउ प्रकाश, अमितोज कहिजै ।।

कोटि इन्द्र इन्द्राण, शाहु शाहाणि गणिजै ।।

त्रिभवण महीप, सुर नर असुर, नेति नेति, बन त्रिण कहत ।।

तव सरब नाम, कथै कवन, कर्म नाम बरनत सुमति ।। (जापु साहिब)

जापु साहिब में सतगुरू ने प्रभु के अनेक नाम वर्णन किए हैं जो उसके अलग-अलग गुणों को प्रस्तुत करते हैं। यह वाणी, नाम स्मरण का एक अच्छा साधन है। अकाल उस्तति नामक वाणी से ही स्पष्ट है कि यह प्रभु की स्तुति से भरपूर है।

2. **नाम स्मरण की प्ररणा :** 33 सवैये बाणी में पहले ग्यारह-सवैयों में प्रभु के गुणों का वर्णन तथा प्रभु नाम स्मरण की प्रेरणा दी गई है। इनमें से एक सवैया उदाहरण के लिए नीचे दिया जा रहा है।

वेद कतेब न भेद लहियो, तिह सिद्ध समाधि सभै कर हारे ।।

स्मिृति शास्त्र वेद सभै, बहु भांति पुरान विचार विचारे ।।

आदि अनादि अगाधि कथा, धरूअ से प्रहलाद अजामल तारे ।।

नाम उचार तरी गनिका, सोई नाम उधार बीचार हमारे ।।

'अकाल उस्तति' वाणी में दस सवैये भी हैं, जो अमृत छकाने के समय पढ़े जाते हैं। सिखों को इन सवैयों का पाठ प्रतिदिन करने पर बल दिया गया है।

- **सारे ही देस को देखि रहिओ मत, कोऊ ना देखीअत प्रानपति के ।।**
  श्री भगवान की भाइ क्रिपा हू ते, एक रती बिनु एक रत्ती के ।। 2 ।।
- **भूत भविख भवान के भूपत, कउनु गनै, नहीं जात बिचारे ।।**
  श्री पति श्री भगवान भजे बिनु, अंत कउ अंत के धाम सिधारे ।। 3 ।।
- **जे नर श्री पति के प्रस हैं पग, ते नर फेर न देह धरैंगे ।। 8 ।।**
- **साचु कहों सुन लेहु सभै, जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभ पाइओ ।। 9 ।।**

चौपाई पा : दसवीं (अकाल उस्तति) में नाम स्मरण की महानता बतलाते हुए आप फरमाते हैं कि प्रभु नाम का स्मिरण यदि एक दिन भी सच्चे हृदय से किया जाए, तो उसमें इतनी शक्ति है कि प्राणी जीवन मुक्त हो सकता है।

सभ को काल सभन को करता ।।

रोग सोग दोखन को हरता ।।

एक चित जिह इक छिन धिआयो ।।

काल फास के बीच न आयो ।। 20 ।।

3. **अवतारवाद का खण्डन :** गुरू जी ने कहा है कि प्रभु जन्म – मरण रहित है, जो अवतार नहीं लेता। अवतारों को प्रभु मानना गलत है, न ही देवी – देवताओं की पूजा करनी चाहिए।

4. **कर्म – काण्डों का खण्डन :** गुरमति के प्रकाश से पहले भारत में कई ऐसे धर्म कर्म प्रचलित थे, जैसे तीर्थ स्नान, मूर्तिपूजा, वनवास, तप तथा पाखण्ड पूर्ण वेष धारण करने वाले का सिख – गुरुओं तथा अनेक भक्तों ने इसका विरोध किया। गुरू गोबिन्द सिंघ जी ने ऐसे विश्वासों पर व्यंग कसते हुए इसके खोखलेपन को प्रकट किया। आपने लोगों को समझाया कि इन कर्मकाण्डों की धर्म से कोई सांझ नहीं : बल्कि ये तो प्रभु प्राप्ति के रास्ते में रुकावट हैं।

(क) **मूर्ति पूजा :** मूर्ति पूजा का विरोध करते हुए गुरू जी बताते हैं कि यह परमात्मा की प्राप्ति का कोई रास्ता नहीं। पूजा अकाल पुरख की करनी चाहिए जिससे सारे दुख दुर होते हैं।

काहे को पूजत पाहन कउ, कछु पाहन मैं परमेसर नांही ।।

ताही को पूज प्रभु करके, जिह पूजत की अघ ओघ मिटाहीं।

आधि बिआधि के बंधन जेतकु, नाम के लेत सबै छुट जाहीं।

ताही को ध्यान प्रमान सदा, यह फोक्ट कर्म करे फल नाहीं ।।

(ख) **तीर्थ स्थान :** तीर्थो की यात्रा करने और वहाँ जाकर स्नान करना भी गुरू जी ने व्यर्थ काम ही बताया है। भले ही ब्राह्मण धर्म के अनुसार इसे मुक्ति का साधन मानते हैं। तीर्थ स्नान बारे गुरू जी के कुछ विचार अंकित हैं:

- **नहात फिरिओ लीए सात समुद्रंनि, लोक गयो परलोक गवाइओ ।।**
- **तीर्थ कोट कीए इशनान, दीए बहु दान महा ब्रत धारे ।।**
- **दीन दयाल अकाल भजे बिन, अंत को अंत के धाम सिधारे ।।**

(ग) **जप – तप :** भारत में मुक्ति के लिए जंगलों में जाकर लोग तप करते हैं। गुरू जी ने इसका विरोध किया।

जप – तप और ऋद्धि – सिद्धि आदि फोक्ट कर्मो का विरोध करते हुए कहते हैं, ''यदि कष्ट सहने से प्रभु मिल सकता है तो घायलों और ज़ख्मिओं को मिलता।'' यदि मंत्र के रटने से भगवान मिलता तो ''पूदने'' पक्षी को ज़रूर मिलता जो हर समय तूही – तूही करता रहता है। अगर आकाश में उड़ने से प्रभु की प्राप्ति संभव होती तो 'अनल' पक्षी को मिलता जो हमेशा आकाश में रहता है। जो मनुष्य अपने चारों तरफ आग जला कर प्रभु साधना करते हैं, वह सती हो रही स्त्री जैसे हैं। यदि ज़मीन के नीचे रहने से प्रभु मिलता तो सांपों को ज़रूर मिलता।

(घ) **अन्य व्यर्थ कर्म :** मूर्ति पूजा, तीर्थ स्नान, जप – तप आदि व्यर्थ काम करके लोग अपने आपको धर्मी कहलवाते हैं। 'अकाल उस्तति' के बीस कबितों छन्द नं. 71 से 90 में सतगुरू ने ऐसे कामों का मज़ाक उड़ाया है। आपने गंद – मंद खाने वाले 'योगियों' को सुअर, विभूति लगाने वाले (शरीर को राख लगाने वाले) को गधा, मठों में रहने वालों को उल्लू, श्मशान भूमि में रहने वाले को गीदड़, उदासी धारण करने वालों को हिरण, मौन व्रत धारण करने वालों को गीदड़, उदासी धारण करने वालों को हिजड़े, नंगे पाँव यात्रा करने वालों को बन्दर कहा है। इसी तरह दूधाधारी संतों (जो अन्न छोड़ कर केवल दूध पीने का पाखण्ड करते हैं) को छोटे बच्चे, जंगल में आने वालों को भूत, पवन – अहारियों को सांप, कंद – मूल खाने वालों को गाय के बछड़े, करामातों के सहारे आकाश में उड़ने वालों को पक्षी, समाधियां लगाने वालों को बगले, बिल्ले तथा बाघ आदि बताया है। गुरू पातशाह ने कर्म काण्डों की जगह पर प्रभु अकाल पुरख से प्रेम डालने की प्रेरणा दी है –

कहा भयो जो दोऊ लोचन मूंद कै, बैठि रहओ बक ध्यान लगाइयो ।।

नात फिरिओ लीए सात समुद्रनि, लोक गयो परलोक ग्वाइओ ।।

वास कीओ बिख्आन सों बैठ कै, ऐसे ही ऐसे सु बैस बिताइओ ।।

साचु कहों सुन लेहु सभै, जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभु पाइओ ।। (अकाल उस्तति)

5. **मानव एकता :** गुरू जी ने सारी मानवता को एक प्रभु की सन्तान बताया है। अलग - अलग धर्मो, देशों, प्रान्तों, इलाकों, वर्गो के बाहरी दिखावे निशान होते हैं। सभी मनुष्य भाई - भाई हैं, बराबर हैं, क्योंकि सभी सांझे पिता की संतान हैं: इस तरह भगवान के अनेक नाम रख लेने से भगवान की एकता का असूल भंग नहीं हो जाता, भगवान एक ही है इसलिए मनुष्य जाति (जिस का वह सृजनहार है) भी एक ही इकाई समझी जानी चाहिए।

कोऊ भइयो मुंडीआ, सन्यासी, कोऊ जोगी भइओ, कोऊ ब्रहमचारी, कोऊ जती अनमानबो ।।

हिन्दू, तुर्क कोऊ, राफज़ी इमाम साफी, मानस की जाति, सभै एकै पहिचानबो ।।

करता करीम सोई, राजक रहीम ओही , दूसरो न भेद कोई मूल भ्रम मानबो ।।

एक ही की सेव, सबै ही को गुरदेव एक, एक ही सरूप सभे ऐकै जोति जानबो ।।

6. **शक्ति का प्रयोग :** गुरू गोबिन्द सिंघ जी ने सिखों को संत सिपाही बनाया है। गुरू जी के संत ऐसे सिख हैं, जो जीवन में आने वाली कठिनाईयों के साथ सिपाहियों की तरह जूझते हैं। इसके इलावा अत्याचारी हाकिमों से यदि माथा लगाना पड़े तो पीछे नहीं हटते। हर तरह के ज़बरदस्ती ज़ुल्म, अन्याय से लड़ने की शिक्षा सभी गुरूओं ने दी। गुरू जी ने हथियारों का प्रयोग भी जायज़ बताया है। यह तभी जब अन्य रास्ते बन्द हो जाएं। जब गुरू अर्जुन पातशाह की शहीदी के बाद भी ज़ालिमों ने अपना रास्ता नहीं बदला तब छठे पातशाह ने सिखों की सेना बनाई, घोड़े, हथियार और युद्ध सामग्री लेकर युद्ध किए। इस तरह जब नौवें पातशाह गुरू तेग बहादुर जी की शहीदी के बाद भी औरंगज़ेब ने अपनी धार्मिक नीति नहीं बदली, तब गुरू गोबिन्द सिंघ जी ने आनन्दपुर को आध्यात्मिक केन्द्र व शैक्षाणिक केन्द्र के साथ युद्ध कला का केन्द्र भी बना दिया। आप आयु पर्यन्त, जाति - अभिमानियों, कट्टर पंथियों, ताकत के नशे में अन्धी मुगल सरकार से युद्ध करते रहे। शक्ति के प्रयोग बारे गुरू जी ने 'ज़फ़रनामे' में स्पष्ट लिखा है ''जब कोई काम सारे उपायों से भी न बने तो हाथ में तलवार लेना भी ज़ायज़ है।''

चूं कार अज़ हमह हीलते दरगुज़शत ।।

हलाल असत बुरदन ब शमशीर दसत ।।

7. **खालसे की व्याख्या :** ऊपर हमने यह पढ़ा है कि गुरू साहिब मानव एकता के पक्ष में हैं, परन्तु एक बात स्पष्ट है कि सिख धर्म एक अलग ही धर्म है। गुरू ग्रन्थ साहिब व दशम पिता की वाणी के अध्ययन से पता चलता है कि गुरू जी गलत विचारों, विश्वासों व रीति - रिवाजों का खुल कर विरोध करते हैं। उन्होंने समझाया कि गुरमति की राह पर चलने से परलोक सुधर जाता है।

गुरू गोबिन्द सिंघ जी ने आदि गुरु, गुरू नानक देव द्वारा स्थापित संगतों को 'खालसा पंथ' का रूप दिया और सिख

'खालसा' कहलवाने लगे। गुरू जी के अनुसार सिख वही है जो 'गुरमति' को धारण करने वाला है और अनमति विश्वासों को नहीं मानता। आप फरमाते हैं –

जागत जोति जपै निस बासुर, एक बिना मन नैक न आनै ।।
पूरन प्रेम प्रतीत सजै, बत गोर मढ़ी मटठ भूल न मानै ।।
तीर्थ दान दइया तप संजम, एक बिना नहि एक पछानै ।।
पूरन जोत जगै घट में, तब खालसा ताहि नखालस जानै ।।

लॉन्च करता : जसबीर सिंघ
Mob. : 099881-60484, 62390-45985
Type Setting : Radheshyam Choudhary
Mob. : 098149- 66882